

दि २

आदिदिगितगाव ॥ मरुगवहताहनाटकसाहावपउगतय
काणनृगकोठकगावप ॥ ॥ सानन्दनन्दीहसाहनमवउव
वाकृतकोमाववहिआसान्नासायवंध्रविगतिरुणियतीरा
गर्भकोदराजि। गीठाडीनालिमालामुखवितककरुसाधुव
गूलयाणवैणायकः श्रेयवावदनविधृतय४याहुवीत्काः
ववत्य४॥ नूतिनादिमुति॥ ॥ अथयियसखीवियागःनयवि

198

Gita-pāṇca
ka

आनन्दसूत्र

1. 84/

I

४

रुच्यववाग ॥ यत्नालानाल ॥ अखनसाजनिमनिचलमात्रिसंग
 रुमदिषणविषियउथलियवान ॥ ५ ॥ डगलरुगिगुरुविरुः
 लरुविहानवकावमिथूनअवंतंअलमलान ॥ एहिखनसः
 खिमाविचिवरुविलल रुमदिकावधविलावलतल ॥ यूनसखि
 कयदलरुमवसनान एविधिकतमाहिकयलतवान ॥ सवि
 नूवरुलाहयाधिनियवान मधूतजिविधिनकरुलसमान ॥ य

वकागरुनवाँदणवअध्वानखनमनिदूनगलरुदयकहाः
 व ॥ ॥ घातमदीयणयनासनसंगनाय ४ यमातिकवकद्यठः
 नानियूनामणीदुः १ शायविनषणयथगलरावकायिधियेव
 निमित्तिकर्तस्वलित ४ कणन ॥ ॥ वलावलवाग ॥ वाखनाल ॥
 निवधनकवस ७ अखसलसूहीव माहिलगसाजनिनहिरुल
 थीव ॥ रुविरुविहमवठयाधिनियाविहविललिणीसविहम

ॐ

वज्रधावि ॥ मृगनृयडुलकटिकामलयांति ददयवाखलरुम
किशलयजानि ॥ तादृमनिहितसखिरुमवननान तादृ विनू
भाहिलेख जगतमलान ॥ यवकाणकयलरुतादृवधान वा
दणषवगिव कवूजवधान ॥ याकामयायदयिसे ४ सावाम
निर्निखिलायुक्तिकलाया ४ देवान्ममेवसरुसा ददयाद्युताः
हिविधिनाल्ययित ४ ॥ ॥ आसावविवाग ॥ खड्गनिताले ॥ मूज

13

दि ३

नसूददयसूगुनसंयूत सुकटिभूतिभूतिनाम सुसखिसूम
वण्डासूमननिसिदिन कववजयडुअनाम ॥ सुखकआकः
व सुवससागव नयनडुअअवहृन्द कयालतिवमलविवूक
सूदव वदनमैनिमकवन्द ॥ तादृहिरुषणतादृहिसूवयन
तादृहिविवनअधान तादृहिसाऊनियवसमनिथिकि रुमवद
दयकलाव ॥ रुमविप्रहिमति सखिरिषयगति मांखितजवय

यू ३

७

वान कद थिय न का ॥ कयल रु अ आ स चांद (गष न क धान ॥
 ॥ ॥ धी ति त या ४ सम धू नाम रिता मूदा विधू वी । दृष्टानुर्वध स
 यर्क मलिनी निज हित ४ र्व ॥ ॥ च त्रु (गष न सिं ह स्य गुण ग्याः
 त्वा य का थ त । गीत (ग्ला का दि रा या रि लि कं त गीत र्व व कं ॥ ॥ ति
 धी गीत र्व व कं च त्रु (गष न वि या (ग धी धी ज य ज ग त्य का स क
 तं य थ म या म ॥ ॥ व र्धु ना स मा य ॥ ॥ अ ध दि ती य डौ म क थ
 ख ३ या १

व र्धु ना ॥ को णि क ना (ग ॥ वा ख ता न ॥ यि य स खि डा न दि ती य
 य रु व व नि आ य ल की मा हि थ ल न य न द ख ल रु म सा द न ॥
 दू न (ग ल डा न जि व क दा स नि स खि कि कू ख न की मा हि ध न रु
 अ रु ल न हि थि कि ज न ड न ॥ ता रु वि नू डा न य ति वि स व ख रु
 म व ति की मू रु म ति तं ड ल रु स रु व वि दू व ति ॥ रु न कि कू
 डा न उ ग त य का ण नृ य ति व न की य न रु व चां द (गष न सिं

रुज्जुतिरुल ॥ ॥ (श्लोक) ॥ दृष्टं दीर्घतर्पणं वरुण्ययि सरवी वर्णा
 यना राषतं (गोवाल) गयनं सुयत्ययि यूनः ॥ मेतन वालक्या
 ॥ क (ग) गङ्गा उवाच मध्वः तिष्ठन् धरुन वायुं दकं सतायं सः
 रुतं यदा मृजमुखी तद्वद्वता रुवः ॥ ॥ कदा वमा लवणाग
 ॥ वाखताव ॥ गगि विनूडाव वज्रनि स रुज्जु अतिमलिन कीत
 नूखिन सखितं जिहमजल विनूमिन ॥ गुनमतडाव गुयूतः

दिरुलमनिहमव कीज्जुतिरुल स रुच निदिधिक वकमलः
 ॥ ऊ विनूडाव जिवक कलं स अतिवाधल कीजल धन निविठ
 रुदखिन दिघावल ॥ द रुदि सडाव मलिन देखल अवंजग
 त कीगतागत रुविबल ऊ हि यियमा विवत ॥ क रुल रुडाव
 ऊगत यका गनृय नियदूख कीग शिमुख चांद (ग) घन वरुमा
 हि मुख ॥ ॥ (श्लोक) ॥ तल्यं सहा समकस्मिन् वदता यवघाणः

त्वंसयवः सरुसागिवरुववाद्यादिगिवः सः ॥ धनाधीनाः
 (ग) ॥ वावताले ॥ आव(गलि) आदवसखिविनूमावी ॥ ५ ॥ खन
 इनततउसखिरुमवठवावा, वांदनीकठवरुतावा ॥ गिवगिव
 सरुमावि, यविहविबला, ऊहिदेवदूखदला ॥ ऊविनूनिऊघ
 वरुलरुडवाट, याववतकिमंगवाट ॥ यवकागरुन, वांदण
 यवयवान, कृणुलविहिनरुलकान ॥ ॥ लाक ॥ रुवताविहि

तस्यमतमसा यविताहिनरुः ॥ वायंमयायिविष्टय, नलिनी
 ऊलथाः साम्यं ॥ ॥ मालववा(ग) ॥ खऊतिताले ॥ यमयासत
 वलरुदेवमावि ॥ ५ ॥ ऊखनसऊनिवरुहमवायास, किचू
 नहिहायतवास ॥ रुमनकावनयियजिवदय(गल) माविस
 खयविहविलेल ॥ कखनरुलरुदिनक(ऊ) अनखनवातिसूम
 लेनवरुवरुकांति ॥ ऊगतयकागरुनतारुहिऊधाव, वांदण

षवसिंहदाव ॥ ॥ (भाक) ॥ एकस्वमवसूहदां याणायिता
 ममननु ४ कान्यादिहनु (भाकानि) त्वंदूवगायदाहम ॥ ॥
 (गायियलरुवाग) ॥ वद्यु (भाक) वतात ॥ ययसिमाविसजनि
 सखि चवणदुज्जवाविजं ताहवडवुकदविसमजाने वृवि
 वकठिसवृयहविववणदमसमानं तन्विधवज्जमिज्जवसवा
 न ॥ धियमावितादि धियमावितादि तज्जिजनूनजवहमा

हि सडज्जुतियायिनि दूखितहमकामिनि हमहिर्गकयक
 वूसंताव ॥ ५ ॥ हदयसखिसविनतादि ववनमाविताहदीसालि
 तमाविनयनरुगताही वदनगणिसनिधवसिधिलहमज्जदव
 गलरुदूवखनहिमनिमादि ॥ सखिदिविनूअधिकधनरुलरुः
 कतहनयक हमवतगकुमतिऊदिमाव एहनदूखज्जधिकरुः
 लसहिनहीयावह मदनज्जवकयलरुयवहाव रुयतिजयज

गतयवकाशरुनतादही. हसनसखिकनवयकलाव. सऊनिः
 थिकितादहितंजवनहिहमहि. कलकवधूकनयजंसावा॥ ॥
 (श्लोक) ॥ मालावालाभजलभेमोकि केहीवयसि ४ काश्चिजातायः
 रुवतिहलोसूत्रव ४ यद्धितेव । अन्यवूमकिमधमनीवरुतवाः
 नवा. ग्याहुन्नादावदहववयं. यानिमूर्दययाति ॥ ॥ चन्द्रशेखर
 सिंहस्य. गुणीग्यात्वायकायत. गीत (श्लोक) दिग्गारि लिखातगीत
 १०

विवर्ततसुमुखदखयकहख ॥ हविहविहमनादिधिजुतिथा
 पि. सविनूदयसनवहलाहकांयि ॥ थमविहिनदखसहिनः
 हिजाय. वदनयनथिकहमनाकाय ॥ जगतयकासकहनितय
 हिवीत. वांदणषनसिंहमाविवरुहीत ॥ ॥ (श्लोक) ॥ एकात्मना
 ४ सुहृदा ४ धीनिकथाविधूववी । दृष्टानूवन्धर्मवर्क. धिययानिधि
 यदित ४ स्त्री ॥ ॥ विरासनाग ॥ एकताव ॥ विधूविनूनिगिरुमः

१२

रुलसखसखिधविहविबल ॥ नदिरुलनयनकनीव सखिविः
 नवाधनयीव ॥ रुमयरुमवतसूला रु सविनूहमवहिसारु ॥
 यनकासनसडुअगाव चांदणवबलगयाव ॥ ॥ प्लोक ॥ व
 जनैवजनैकुलैकुलै चनसावाधनसाव वृथयि । अववाधयूनी
 खकामिनी कुवनीमिवकातनध्वनि ॥ ॥ गुरुविवाग ॥ यवताः
 नाताल ॥ सायसायकुलवधूवावि नसदयसखबलगावि ॥ स

मूचितदुरुजनदुरु दिनदिनवाधलसिनरु ॥ खनरुनतजस
 खिभाहि दवकवनावजतताहिसजावविसुखरुलमाविनि
 वितकिर्मगगल ॥ उगतथकाशवलसाव चांदणवकयनः
 दान ॥ ॥ प्लोक ॥ समयागतवतिवेकु नियततिथयकुलवम्व
 धिकाया । मृदुगकथालवाली गिवगिवतालीदवशुतिलरु ॥
 सावधिवाग ॥ खजतिताल ॥ मृजनसाजनिमिलवसमूचितकुवि

ज्ञान चांद (गोषवर्मिहक नू अवधान ॥ ॥ श्लोक ॥ मानन्दमस्य
 वष्षासिमदायमानं संसृत्य संयतिद्वयः कनू (गो) दयाम ।
 संजायते सखलदीर्घमिदं त्वमप्यः तद्विदुः (गो) दिवविथागरुवण
 रुयः ॥ ॥ कदाचमालववा (गो) लांतिताय ॥ सखिदुक्तं
 इत (गो) विमतिमात्रि ॥ ५ ॥ इति नद्वलद्वमिद्विद्विद्विलल
 इति समसखलद्वन गिषुद्विद्विलना अधवककांदिद्विद्वक

खनताद्वद्वयद्वजद्विद्वि कखनद्वववुजकांदि ॥ ताद्वि
 यवमयद्वयावलमाजति दुजयूनद्वमवद्वसाथ विद्वनन
 दिथिदिद्वमसतियायिनि मतिध्वद्वन (गल) दाथ ॥ इमदिः
 कावधविनीयकपलं इति दमाद्विवद्वन रुनयिषकासः
 नृय चांद (गोषवर्मिह) ताद्विगाद्विपकदिद्वन ॥ ॥ श्लोक ॥ य
 दिद्विरुवतिकामः कान्तया वरुमानः यरुवति सरुवासात्काः

किमात्रमयार्थत् ॥ किमपिच विधिवृत्तं त्वंयकाशात्मकान्द
 मदिहकवसिद्वन्नेयाकिं (प्लवराव ४॥ ॥ सावधिना (ग) ॥ ख
 जतिनाल ॥ मृविदिजप्रियनियकन हिदा (ला) हवखहिमाः
 जतिह ॥ ५॥ हवखिसाजतिसनियवसिद्वकयलमृदितविह
 व सखिकयानिलयडवसिधविकरु मरुज तसूमाविहव ॥ स
 नियगीतलजलधना यवनधिवधिवयास ऊहायवनयवसि

मखरुल आवकपलरुनाम ॥ पढनप्रियसखिकतद्रु (गल) आव
 मरुतरुयतक्रियाव जकन घूतहमहिमिनिवहकन वमिनिद्व
 रुराव ॥ जगतयकाशकनयडुआस यमहिनमतसूजान वा
 द (ग) वन यमकआकन दूरकपकहियनान ॥ ॥ (प्ल) क ॥ वतिय
 तिः प्रियया मरु (ग) रुत रुवतिरुषणमरुयनस्यन ॥ किमितिर्म
 मवधीनयसिधियं प्रियमखयदनीक (ग) मवत ॥ ॥ वन्दु (ग) वन

सिद्धस्य गुणं ह्यात्वा यका ग्यतं गीतं श्लाकादिशया किलिख्यत गीतयं व
 कं ॥ कृतिशी गीतयं वकं वन्दुः शेषत्र विद्यागः श्रीश्री जयजगत्पुकाः
 सकृत्तं वदुर्थयाम ~~वदुर्नासमायका~~ ॥ ॥ अथयं वमयाम वदुर्न
 ॥ वनाठिनाग ॥ एकतात्र ॥ कमविनिमूदलिकु मूदयका ससंव
 विषिय सखि अयल द्रुयास ॥ डाह वजति आवकत वलिगल जि
 वरुत अ वसहि कथित हि रुल ॥ अधव अनल तनू सहित हि जा

१८

य करव नदख वरुम प्रिय सखि काय ॥ जगत यका गनय वस्य
 हिदुख चांद शेषत्र सिद्ध वय गल सुख ॥ ॥ श्लाका ॥ तव कसू
 मग वरुत गीत वग्नि त्वमिन्द्रा द्रय मिद मयथार्थ दृश्यत मदि धेयुः
 ॥ विमृजति हि मग क्वे वग्नि मिन्द ४ कनाये ४ त्वमयिकु ससवाणा
 नवज सावी कवायि ॥ ॥ रुथ्या विद्याग ॥ यता वतात्र ॥ अमिनसः
 हिवाया गनु मान विद्याग अनकया वलं सुख दुमान संया ॥ ॥ दु

ला

मीनछाडिलाथमच्छुलादव विनतिसूनियादव धियसंगन
 व॥ हियाततावियादेव लयगलाथानं दूखलागिलं माविम
 वमवानं ॥ मदनकळलावनवनकळलूधन धूटियाहिविया
 संगयाळूवावन ॥ कहिलायकागनयकुमावआसा वादणव
 सगयायिवावासा ॥ ॥ (श्लोक) ॥ नीलांशुब्रह्मकाननै नतिवसति
 धांतात्कनार्णकया स्वकीअविताश्रवाविकलिका स्नावाउमात्

यश्रति । मयासंमद्रुनीकतयचकिताहं संहि मांशुउमा नस्वाः
 स्त्रीरुजतहिकुविनहाणकीनथांगाकयश ॥ ॥ यदुडिया ॥ य
 तावा ॥ विहिनयनमदूख करवनदखवमूख ॥ रुमविसनरुः
 ऊनू ॥ ॥ कवनसजनिमन माविद्वदयवचनं ॥ ललरु कूल
 वधूराव अकविधियसखियाव ॥ उगतयकागनयनान वा
 दणवजवधान ॥ ॥ (श्लोक) ॥ नादत्सहवितकिवानूकविद

यिच्छेयं नवा लम्बस यत्तयथा कूल लावनासिकवर्णकूडं दिग
 ४ यथसि । देवनां तवित प्रियासि रुविणत्वं वायिकिं यच्चिर्न । यथ
 दिष्टदिकद्वयं प्रतित दिष्टतृष्वयं यथसि ॥ ॥ कावावनाग ॥
 वाखताम ॥ सवकर्वचलमतिव्रमाहिसखि एकगति ॥ सवकः
 कथं मयं दखि डयजल रुय ॥ धनमनमानय जतदखया
 यमय ॥ यकाणवृय एह गाव वां दणेष्वल गयाव ॥ ॥ क्षाय

का दणैर्वतवितागते श्वसवितामूर्त्तीरुतां कानने यत्तनायिन
 यामितावनयथं कान्कतिजानन्तयि । उद्गीवश्च वणार्द्धवृद्धवसूध
 ४ कृत्वाष्ट्रपूजुर्दृष्टं तामतां यथिकस्रथायिकिमिवधायीश्चिर्नवीः
 कृतं ॥ ॥ नाटमन्त्रावनाग ॥ खर्जलांजताम ॥ सद्यनधावनवि
 वरुदायकश्रवतिजिववकथीनताविततावितविश्विचमकव
 दखितरुलतनूखीन ॥ खिततनू समव ॥ ॥ सखिकसूनाम दुज

यूनयूनथमात्रिमतिकाम ॥ ॥ (श्लोक) ॥ ऊलदऊलमथार्य धावण
 ४ संयवृल श्वनतिरुवितिणीधुं विद्यददामरीमा । अनूयलमतिन
 कं सन्म (७) ४ काकिमात्रसुवलयतिहिधिल संस्ततायकमोर्ध्व ॥ ॥
 प्रथमकादवयमवधावय एकहिरुलदूदददऊ विधिजननदि
 तिनरुमायन तविधिवाठलसिनरु ॥ नरुमात्रिसवयलसाजति
 वावि ताहविनरुमनहियायवसंरावि ॥ ॥ (श्लोक) ॥ ऊलकनसमू

दाया रुद्रपवारिनाम ४ यमवतियविताहियातिवाविधमर्याक
 थयकथयनूनमल्लियासिल्लभक सुवविनरुऊताय ४ कनगास्यत
 रुय ४ ॥ मासआसिनकनूणकावण रुलविमधूनीजातिखजुति
 निवमलदापन एदिवविककनमाहियवियाति ॥ यवियातिधिः
 यमखिकएगलआव ऊविनमात्रिजुतिपहितनूताव ॥ ॥ (श्लोक) ॥
 वन्धुकमल्लिकमूदानि सकुडुंमलानि यकत्सवाजमनूवागरुवण

रुय४नेरवीविलाकवजनीमयिचानूचन्द्यांघीचन्द(गघवर्ण४ क
 लथगुलोद्यं॥ ॥कारिककांदवसखिकगुणवृषिसहिनयाववदू
 खकूलविठुलनारुलकुरुमधनिशजलजतमाविमूख॥सूखसखी
 जननियविंललसगविजनममाविबंदनरुल॥ ॥श्लोक॥रुयावि
 लाकललिताउमूखातिवर्कयग्नसूखायमनूचयगुणंसखीनां
 दूनयिथनसूदयास्मिदिनीनववयाफादगामनूचिनामयिकदिशी

किकाउजुवसकववधिययावयकसाउ॥ ॥श्लोक॥नद्यायविसूत्र
 निवाविदवाजिभखा रुवाकिलाकालिन४कलयनुकली४मच्चिरु
 वृलिमनूवंधयसचन्दवृ४थमामयदिमूधियायवियाकनवा॥ ॥
 मायवावदुरुनययवकासजुयनसुनिमूनिदूखवादिगघवयायद
 मवारुलकयवमहिसूख॥सूययाडावदुभउहिलगयायजुलिमनः
 याववथुयियसखिकाया॥ ॥१३॥ ॥श्लोक॥रुमहीन्दनृयचन्दुज

२२

हृदय कथिन हि गिषम सञ्जुह दखिन रुल प्रिय कांति ॥ रुम उन्न विम
 न रुम वां द किन लो द रुम ॥ गगन यूवल मद्य हि एहि खन सुनल वाट
 कवाल सखि हि विन सुनि वदन डय जल यूव विध वली नाव ॥ कथिन
 हिया वृत्त व विनू प्रिय सखि व त व ॥ गगन द ग गि द खि मूदिन कू मूदिनि
 सव हि न क न य का ग क वि धि त ज व सा ज नि वि नू म रु अ व स रु ल मा वि
 ना ग ॥ दू व ग ल आ द व व स रु व वि डा रु रु म व सकल दि ग अ व गी त व

न२

न३

हलि रु यू व वि म हि हि रु मा व स ज नि व स म रु रु म रु म रु य व रु व रु व
 क य ल वि रु न ॥ स वि नू जी व व व स दा गि व स डा व व ॥ गि गि व स म य सा
 ज नि उ अ व रु हा य न क न क न सू ख न कि क स वि नू स व हि न ज ल रु म
 हि स व स रु व दू व ॥ य व का ग गा व न व वां द ल य व या व य व ॥ ॥ अ वा का ॥
 य हा व ह य दि व ज मि रु व न वा वां रु व नू य वा नि र्ज न्म मि नि कू ज भ
 व य दि वा का व द किं स्या दि ति ॥ नि षा म्म व य दि क वि द न त ट किं जा त भ

तामहावाधवर्मकलानिधः समूयथा मातः किमातन्यतां ॥ चन्द्र
 णमवसिहस्य गुणैः क्लात्वा यका गायतः गीतः श्लाकादिः श्लाकाः लिख्यतः गी
 तयश्चर्कः ॥ अन्तिमी गीतयश्चर्कः चन्द्र णमवविथाः गीती गीतयश्चर्कः
 यकाः गीतयश्चर्कः यकाः गीतयश्चर्कः यकाः गीतयश्चर्कः ॥ अथ यकाः यकाः यकाः यकाः
 कदाचमालववाः ॥ लांजती गालाः ॥ सखि संगखलयितः अधनिगि गाल
 तखनमः शयियदूः निदवसरुलः माहिकवसखिगि वः आसनयलः

हिमं गायरुलदूः मवाहीनः ॥ अतः कसूखरुमः उंजलः सखि संग वसितः रुल
 तनूवीनः खनदूमाजानि रुमदूनतः उयः उविधिद्यनः वसमीनः ॥ उगतयर्कः
 गरुनयवदनः जानयदवः ॥ गानः वां दः णमवः रुमकादरु यनूः सदिनजाय
 मलानः ॥ ॥ श्लाकाः ॥ ददनाममयर्कः वदूः ॥ ४४ ॥ यदूः ॥ गीतयश्चर्कः ॥ णमवः रुमकादरु यनूः
 गीतयश्चर्कः ॥ यत्सर्वतः ॥ सूरवनिधानमिदं यनामः विः ॥ षतः रुमदिहदावसदनः
 तायी ॥ चन्द्र णमवसिहस्य गुणैः क्लात्वा यका गायतः गीतः श्लाकादिः श्लाकाः लिख्यतः

तगीतयश्चकी॥ ॥ॐतिथीगीतयश्चकचन्द्रगणवविथागधीधीडयऊतूय
 कागकतसयूमयामवर्धुनासमाय॥ ॥अथाष्टमयामवर्धुना॥ ॥
 मालवनाग॥खर्जति॥आ०यरुवसखिवरुभाविशंगऊभाहिअरुमनकव
 ३३ कतनंग॥एरुनहीतयियआवकतगलसविनूतनूकअविडीवहिरुल॥
 अवनारिधिवजहमवयवानयतिविनूवतिमाविरुलडयमान॥अगयका
 गरुनताहुरिअधानूचायगणवभाहिडवकहान॥ ॥आक॥यामाष्टकीयि

॥यरुठिया॥खर्ज॥वदनवारुल॥	॥मालव॥वा॥कदूरवनसरुववि॥	॥ काख
॥ॐतिसयूमयामवर्धुना॥ ॥	॥सारंगीयम॥वा॥अथिवकवा॥	॥
॥अथाष्टमयामवर्धुना॥ ॥	॥ॐह्यष्टमयामवर्धुना॥	॥ ॥
॥मालव॥खर्ज॥आ०यरुवस॥	॥	॥
॥कावाव॥वा॥यियाअनूनाग॥	॥	॥
॥वसन्त॥यता॥दावूगविवरु॥	॥	॥

३०

आशा भरुवाथि	
1.841	I

ASHA ARCHIVES